169

चौथा संसार

इंदौर मंगलवार

२८ मार्च २०००

स्वास्थ्य

'कर्कटोल' कैंसर का करिश्माई इलाज

भारतीय जड़ी-बूटियां कैंसर जैसे जानलेवा रोग से निपटने में सक्षम हैं। राजस्थान के आयुर्वेदिक चिकित्सक नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है। उन्होंने असम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार १८ वर्षों तक वनस्पतियों का अनुसंधान कर कर्कटोल नामक यौगिक इजाद किया है। ८ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिंदगी देने में सफल हुए हैं पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केंद्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है। वे 'घर का जोगी जोगड़ा, आन गांव का सिद्ध' साबित हो रहे हैं। अपने देश और राज्य में उनकी उपेक्षा हो रही है पर विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है।

डॉ. तिवारी द्वारा तैयार यौगिक खासकर गर्भाशय, स्तन, यकृत, प्रोस्टेट, हड्डी, भोजन नली व रक्त कैंसर के इलाज में काफी असरदार साबित हुआ है। अन्य प्रकार के कैंसर में भी इसके अच्छे [illegible] सामने आये हैं। सिर्फ एसाइटिस [illegible] में यह बेअसर सिद्ध हुआ है। खास बात यह है कि कैंसर की अंतिम अवस्था में भी कई मरणासन्न रोगी इस दवा से ठीक हुए हैं। महाराष्ट्र से राजस्थान लौटकर यहां जयपुर मालवीय नगर में अपने घर से ही कैंसर पीड़ितों को जीवनदान दे रहे ६० वर्षीय डॉ. तिवारी बीते २० सालों में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं। उन्हें मिली इस करिश्माई कामयाबी पर सहसा भरोसा नहीं होता, पर रोगमुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटें इसकी पुष्टि करती हैं।

नाम व दाम की लालसा न होने और प्रचार से दूर रहने के कारण डॉ. तिवारी अभी तक अपने गृह राज्य में ही लगभग अनजान बने हुए हैं। दूसरे राज्यों में उनकी ख्याति मुंह से मुंह फैली है। सो उनके पास राजस्थान से ज्यादा मरीज महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र, केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, पंजाब आदि राज्यों से आते हैं। उनकी ख्याति देश की सीमा भी पार कर चुकी है। अमेरिका, जापान, कनाडा, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, पाकिस्तान, दुबई, बहरीन, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों के कैंसर पीड़ितों ने यहां आकर डॉ. तिवारी की दवा कर्कटोल से फायदा उठाया है। अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डॉ. तिवारी को मरीज रेफर किये हैं। इनमें रायल मार्सडेन हास्पीटल लंदन, चिल्ड्रंस हास्पीटल कैलिफोर्निया, द ईगल्स क्लिफ मेडिकल प्रैक्टिस क्लीवलैंड और सेंट थामस हास्पीटल लंदन शामिल हैं। थामस हास्पीटल से एफ.आरसीएस. की डिग्री लेने में भारतीय डाक्टर गौरव मानते हैं।

कैंसर उपचार में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने उनके काम पर फिल्म बनायी है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घंटे का इंटरव्यू प्रसारित किया। हालैंड, जर्मनी, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, सिंगापुर जैसे अनेक देशों में उन्हें उपचार के लिए बुलाया जा चुका है। देश के सबसे बड़े कैंसर उपचार केंद्र टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल, मुंबई व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डाक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं। इनमें से देश-विदेश के कई मरीज कर्कटोल से ठीक हुए हैं। टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसरग्रस्त डाक्टर को भी इलाज के लिए यहां भेजा गया है।

डॉ. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते। उन्होंने बताया कि उनके पास ज्यादातर (९० फीसदी) मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें हर तरह के लंबे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है। इन रोगियों को डाक्टर यह कहकर घर लौटा देते हैं कि वे अब भगवान को याद करें। कैंसर की अंतिम अवस्था वाले ये रोगी मौत के काफी करीब पहुंच चुके होते हैं। फिर भी उनमें से १० से ३० फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और ३० से ४५ फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है, जबकि ४५ से ५५ फीसदी रोगियों को फायदा नहीं हुआ। अंतिम अवस्था के कैंसर में उन्नत एलोपैथिक चिकित्सा से ५ से १० फीसदी मरीजों को ही लाभ हो पाता है। ऐसे में डॉ. तिवारी की सफलता का आंकड़ा बहुत मायने रखता है। कैंसर की दूसरी अवस्था (सेकंड स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर ४५ से ५० फीसदी बताते हुए वे दावा करते हैं कि उनकी दवा प्रारंभिक अवस्था वाले ज्यादातर (८० फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की कूवत रखती है। देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किये गये परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गयी है।

इन परीक्षणों की रपटों के साथ डॉ. तिवारी के पास कई मरीजों की जांच रपटें भी मौजूद हैं। इनमें ऐसी रपटें शामिल हैं, जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीजों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डॉ. तिवारी के इलाज के बाद जांच कर उन्हीं मरीजों में कैंसर का प्रभाव शून्य (निल) बताया है। १९७९ से कैंसर का इलाज कर रहे डॉ. तिवारी ठीक हो चुके कई मरीजों का रेकार्ड जला चुके हैं, क्योंकि उनके पास उसे रखने की जगह नहीं है। १९८५ से १९९० तक के रेकार्ड के आधार पर जुटाए उनके आंकड़े बताते हैं कि इस अरसे में उन्होंने १९७७ रोगियों का इलाज किया।

उनमें भोजन नली के कैंसर के ४२९, स्तन कैंसर के २०८, गर्भाशय के कैंसर के १७८ व ब्लड कैंसर के १६२ रोगी थे। भोजन नली के कैंसर रोगियों में से २८ फीसदी को सौ फीसदी हुआ, २७ फीसदी को काफी लाभ मिला जबकि ४५ फीसदी को फायदा नहीं हुआ।

स्तन कैंसर के रोगियों में से दस फीसदी को सौ फीसदी लाभ मिला, ४४ फीसदी को काफी फायदा हुआ जबकि ४६ फीसदी लाभ से वंचित रहे। गर्भाशय के कैंसर के १५ फीसदी मरीजों को सौ फीसदी व ४२ फीसदी को बहुत फायदा पहुंचा जबकि ४३ फीसदी को कोई लाभ नहीं हुआ। इसी तरह रक्त कैंसर के रोगियों में से १३ फीसदी पूरी तरह ठीक हो गये, ३५ फीसदी को काफी आराम मिला, जबकि ५२ फीसदी को लाभ नहीं हुआ। '९१ से '९९ तक के आंकड़ों को वे अभी तालिकाबद्ध नहीं कर पाये हैं।

डॉ. तिवारी के पास मौजूद मरीजों के ब्योरे व प्रयोगशाला जांच रपटों से पता चलता है कि उज्जैन की उत्तमराव बाई (६०) में बच्चेदानी का कैंसर अंतिम अवस्था में पहुंच चुका था। वे ४ माह तक कर्कटोल का सेवन कर पूरी तरह रोगमुक्त हो गयीं। इसी तरह के कैंसर से पीड़ित इंदौर मध्यप्रदेश की डॉ. एम.के. बागले (६२) जैसी कई महिलाएं ४ से १६ माह तक कर्कटोल के सेवन से पूरी तरह ठीक हो गयीं।

दिल्ली निवासी डॉ. महेंद्र जेठी (५७) रीढ़ की हड्डी के कैंसर से पीड़ित होकर बिस्तर पकड़ चुके थे। सभी हड्डियों में कैंसर फैल जाने से उन्हें प्रैक्टिस बंद कर देनी पड़ी थी। डॉ. तिवारी से ९०-९१ में दो साल इलाज कराने के बाद पूरी तरह रोग मुक्त होकर वे फिर प्रैक्टिस कर रहे हैं। दिल्ली के उमेश बत्रा (२८) को पेट का कैंसर था। सारे डाक्टर जवाब दे चुके थे। टाटा कैंसर अस्पताल, मुंबई में आपरेशन के लिए उसका पेट खोला गया। अंदर की हालत बेहद खराब देख डाक्टरों ने बिना आपरेशन किये वापस दिल्ली भेज दिया। उसकी जिंदगी के दिन गिनती के बता देने से घर में रोना-पीटना मच गया। दो साल पहले ही उमेश की शादी हुई थी। उसकी मरणासन्न हालत देख डॉ. तिवारी ने भी दवा देने से मना कर दिया पर परिजन नहीं माने। उनकी जिद पर बिना पैसे लिए दो माह की दवा दे दी। तब तक परिजनों को इसका भी भरोसा नहीं था कि उमेश दिल्ली लौटने तक जिंदा रह पायेगा पर कर्कटोल का करिश्मा काम कर गया। उमेश स्वस्थ होकर १५ सालों से अपना काम-धंधा कर रहा है। अब वह ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर में आटो पार्ट्स की दुकान चला रहा है। यहीं के महाराणा प्रताप नगर, खातीपुरा निवासी टैंकर चालक रामसिंह चौहान (५४) को कर्कटोल ने ६ माह में तीसरी अवस्था के गले के कैंसर से निजात दिलाई है। रोग ज्यादा फैल जाने पर वह बिस्तर पकड़ चुका था। अब वापस ट्रक दौड़ा रहा है।

क्या आप अपने भोजन में सभी पौष्टिक तत्व ले रहे हैं?

■ सोनी मल्होत्रा

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में हम अपने आहार की ओर ध्यान नहीं दे पाते। हमारे पास यह सोचने का समय ही नहीं होता कि क्या खाना है, कैसे खाना है। हरी सब्जियों व फलों की जगह हम फास्ट फूड की ओर बढ़ रहे हैं। इस कारण हमारे शरीर में नुकसानदेह वसा उस सीमा तक पहुंच जाती है, जिसे खतरनाक कहा जा सकता है। इस स्थिति में अपने आहार के प्रति हमें अपना दृष्टिकोण पूरी तरह से बदलने की आवश्यकता है अन्यथा हमें अनेक गंभीर बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। आइये देखें कि हमें अपने भोजन में किस पौष्टिक तत्व की आवश्यकता होती है और किस भोजन में मिलता है-

विटामिन- विटामिन कार्बनिक पदार्थ है, जो बहुत से भोज्य पदार्थों में मिलते हैं और शरीर को सामान्य रूप से चलाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। विटामिन कई प्रकार के होते हैं और उनकी कमी से हमारे शरीर पर अलग-अलग प्रभाव पड़ते हैं।

विटामिन ए- शरीर के उत्तकों के विकास के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है। स्वस्थ और कांतिवान त्वचा के लिए भी इसका संतुलित मात्रा में होना आवश्यक है। इसके अच्छे स्रोत हैं मक्खन, दूध, मछली का तेल, गाजर, पपीता, बंदगोभी, पनीर आदि।

विटामीन बी- इसमें इसी नाम से कई विटामिन शामिल हैं-

विटामीन बी-१- अगर आप ज्यादा श्रम करते हैं या व्यायाम करते हैं तो आपको इसकी अधिक जरूरत है। इसके मुख्य स्रोत हैं गेहूं के अंकुर और सूअर का मांस।

विटामीन बी-२- लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन में इसकी खास भूमिका होती है। इसकी कमी से लाल रक्त कोशिकाओं का स्तर कम होता है। इसके मुख्य स्रोत दूध, अंडा आदि हैं।

विटामीन बी-६- यह खमीर, अनाज के छिलकों, अंडे, मांस में अधिक मात्रा में मिलता है।

विटामीन बी-७- इसकी कमी से पाचन क्रिया में दोष उत्पन्न होते हैं। अंडा, मांस, दूध, पनीर, फल आदि इसके अच्छे स्रोत हैं।

पूर्ण लगन और [illegible] किये गये [illegible] परिणामस्वरूप अ[illegible] जाने वा सफेद [illegible] प्रत्यारोपण के ही [illegible] सहायता से डॉ. [illegible] योग्य बना दिया है [illegible]

हालांकि इस [illegible] चिकित्सा पद्धति [illegible] चिकित्सकों ने अप[illegible] हैं, किंतु उनके प[illegible]

सफे[illegible]

संतोषजनक नहीं [illegible] द्वारा किये गये व्या[illegible] हैं। आयुर्वेदिक [illegible] औद्योगिक (हर्बल [illegible] खनिजों का प्रयो[illegible] अथवा पहचान का [illegible] और एकाग्रता का [illegible] इस कार्य को यथेष्ट [illegible] सफलतापूर्वक संप[illegible] औषधियों का संधा[illegible] पर उभरे सफेद दागों [illegible] शनै-शनैः पूरी तरह [illegible] साथ समायोजित क[illegible]

आमतौर पर सफे[illegible] शारीरिक कुरूपता [illegible] झेलनी ही पड़ती है, [illegible] बीमारी को लेकर व्य[illegible] के कारण मरीज को [illegible] का भी सामना [illegible] फलस्वरूप मरीज ही [illegible] के शिकार हो जाते [illegible] तथा व्यक्तिगत सफ[illegible] आड़े आता [illegible] लड़के-लड़कियां [illegible] लेकर काफी तनाव में [illegible] के नाम से भी पुकार[illegible] में व्यक्ति के शरीर प[illegible] जाते हैं। यह रोग [illegible] हिस्से को प्रभावित [illegible]

इस बीमारी का [illegible] जाने वाले मेलानिन [illegible] जहां-जहां मेलानिन [illegible] क्षेत्र को यह प्रभावित [illegible] लोगों में बिंदी या [illegible] अथवा किसी रसायन [illegible] सफेद हो जाता है। [illegible] [illegible]